मेईजी पुनर्स्थापन

DSE - 4 ①
SEM - VI

पश्चिमी देशों के साथ संपर्क का चीन और जापान में अलग - अलग प्रतिक्रियाएँ हुई। जहाँ "स्वर्गिक साम्राज्य" ने इसका उत्तर देने के लिए पीछे की ओर देखा वहीं "सूर्योदय के देश" ने आगे की ओर देखा। जापान ने पश्चिमी देशों के अच्छे तत्वों को अपनाकर अपनी प्रगति के मार्ग को सुगम बना लिया। साथ ही जापानियों ने प्राच्य नैतिकता और पाश्चात्य विज्ञान के समन्वय पर जोर दिया और पश्चिम का सामना करने के लिए उसी के साधनों को अपनाने पर जोर दिया गया। पश्चिमी साहित्य, विचारधारा, ज्ञान - विज्ञान और युद्धविद्या को जापानियों ने अपनाया। इस प्रकार जापान एक आधुनिक देश की ओर अग्रसर हुआ और इसी भावना ने जापान में मेईजी पुनर्स्थापन की पृष्ठभूमि का निर्माण किया।

मेईजी पुनर्स्थापन के कारण :—

व्यवस्थाओं के प्रति असंतोष :-

जापान में पश्चिमी देशों के आगमन और इससे उत्पन्न व्यवस्थाएं आम जापानियों के असंतोष का कारण बनी। जापान का सम्राट नाम मात्र के लिए शासन का प्रधान था। वास्तव में शासक शोगुन था। अर्थात सैद्धांतिक रूप से शोगुन सम्राट का केवल अभिकर्ता था पर व्यावहारिक दृष्टि से राज्य की सारी शक्तियाँ शोगुन के नियंत्रण में थी। इस काल में पश्चिमी देशों के साथ जितनी भी संधियाँ हुई उसके पीछे शोगुन का ही सीधा हाथ था। तोकूगावा के अतिरिक्त जापान में सामंतों के अन्य वर्ग भी थे। जिनमें से कुछ तोकूगावा शोगुन के विरोधी बन गए। जापान में यूरोपियों के प्रवेश से शोगुन को अपदस्थ करने का अच्छा अवसर मिला।

जापानी समाज में भी अनेक प्रकार के असंतोष व्याप्त थे। शोगुन ने विरोधी सामंतों पर अनेक प्रतिबंध लाद रखे थे। 'सांकिन कोताई' कानून के द्वारा उन्हें दुर्ग बनाने, उनकी मरम्मत कराने, जंगी जहाज बनाने, सिक्का ढालने तथा शोगुन के आदेश के बिना ब्याह-शादी करने की मनाही थी। प्रत्येक दो साल पर उन्हें चार माह के लिए शोगुन की राजधानी येदो में हाजिर रहना पड़ता था। राज्य के उच्च पदों की नियुक्ति में भी शोगुन पक्षपात करता था। इन कारणों चोशू, सात्सूमा और तोसा के सामंत सामंत शोगुन के विरोधी बन गए।

आर्थिक दृष्टि से भी आम जनता की स्थिति दयनीय बनाने की कोशिश की गई। इसका असर सामुराई वर्ग के सामंतों पर भी पड़ा जो वैसे प्रधान वर्ग था। उन्हें वेतन के स्थानीय सामंतों ने आर्थिक दबाव के कारण हटाना शुरू किया। इससे सामुराईयों में भी असंतोष पैदा हुआ।

इस प्रकार जापान में शोगुन विरोधी सामंतों का वर्ग असंतुष्ट था।

व्यापारी वर्ग में भी असंतोष की भावना बढ़ रही थी। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ग बड़ा ही संपन्न और प्रभावशाली था। सामंतों को भी अपनी आवश्यकताएं पूरी करने के लिए कई बार व्यापारियों से कर्ज लेना पड़ता था। इसके बावजूद समाज में सामंतों के मुकाबले व्यापारियों की प्रतिष्ठा नगण्य थी। जापान के कृषक भी तत्कालीन व्यवस्था से असंतुष्ट थे। करों के बोझ से उनकी कमर टूट गयी थी। व्यापारी तथा कृषक इन तमाम त्रुटियों के लिए शोगुन को जिम्मेदार मानते थे।

अतः प्रत्येक वर्ग शोगुन की शक्ति का नाश चाहते थे।

Scanned with CamScanner

आंतरिक व्यवस्था :-

इस काल में देश में चारों ओर अशांति और अव्यवस्था फैली हुई थी। आपसी कलह, आंतरिक द्वेष और विघटन का दृश्य आम हो गया। विदेशियों के जीवन और संपत्ति पर आक्रमण होने लगा। "सम्राट का आदर करो और विदेशियों को मार भगाओ" के नारे लगाये जाने लगे।

शोगुन की विदेशियों के प्रति नीति :-

शोगुन ने विदेशियों के लिये जापानी द्वार खोल दिये। इन्हें जापान के व्यापार करने की अनुमति दे दी तथा व्यापारिक संधि कर ली। इससे बहुत से प्रभावशाली व्यक्ति शोगुन से नाराज हो गये। इन्होंने पश्चिमी देशों के लिए जापानी द्वार खोलने का विरोध किया। इन विरोधियों में समुराई, सत्सुमा तथा चोशू कुल के प्रधान सरदार शामिल थे।

सामंतों का शोगुन-विरोधी व्यवहार :-

जापान के शोगुन से द्वेष रखने वाले सरदारों को शोगुन के विरुद्ध नारा लगाने तथा उन्हें दोषी ठहराने का मौका मिल गया। वे क्योटो के राजदरबार में जमा हो गए। समुराईयों ने नारा लगाया "सम्राट् का सम्मान करो, बर्बर विदेशियों को खदेड़ भगाओ।" सारे देश में आपसी कलह, आंतरिक फूट तथा पृथक्करण की लहर झलकने लगी। अतः तत्कालीन शोगुन को क्योटो में बुलाकर यह आदेश दिया गया कि वह विदेशियों को देश से बाहर निकालने की आज्ञा का पालन करें।

विदेशियों पर आक्रमण :-

तोकुगावा विरोधी सामंतों ने विदेशियों के विरोध का नेतृत्व

Scanned with CamScanner

किया। फलस्वरूप विदेशियों पर यत्र-तत्र आक्रमण होने लगा। 1859 ई - 1865 ई के मध्य में ब्रिटिश दूतावास पर दो बार आक्रमण हुआ तथा ब्रिटिश और अमेरिकन दूतावास जला दिये गये जिनमें अनेक विदेशियों की मृत्यु हो गई। शोगुन इन आक्रमणों को रोकने में असमर्थ था। इसी समय 1862 ई॰ में सतसुमा के एक जुलूस को परंपरागत ढंग से रास्ता नहीं देने पर "रिचार्डसन" नामक एक अंग्रेज को अपने साथियों सहित मार डाला गया। फलत: ब्रिटिश जहाजों ने सतसुमा की राजधानी कांगोशिमा को गोलाबारी से ध्वस्त कर दिया। 1863 ई॰ में सम्राट ने विदेशियों के जहाजों पर रोक लगा दी और इसके कार्यान्वित करने का भार सामंतों ने लिया। 1863 ई॰ में शिमोनोसेकी जलडमरूमध्य के किनारे से चोशू जहाजों ने गोलाबारी की। प्रत्युत्तर में अमेरीकी और फ्रेंच जहाजों ने चोशू के किलों पर गोलीबारी की। 1864 ई॰ में ब्रिटिश तथा डच जहाजों ने भी चोशू सामंत के किलों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। इन सब घटनाओं से विदेशी की प्रचण्ड शक्ति का पता चला और अंत में सम्राट ने भी शोगुन की नीति का समर्थन किया। साथ ही 1865 ई॰ में नई संधियों को भी मंजूर कर लिया गया।

मेईजी पुनर्स्थापन :

इन सब घटनाओं के फलस्वरूप शोगुन की शक्ति और प्रतिष्ठा को बहुत बड़ा धक्का लगा और शोगुन का प्रभाव जाता रहा। सामंत उसके चंगुल से मुक्त हो गए। वह न तो सामंतों को विदेशियों पर आक्रमण करने से रोक सका और न सामंतों को विदेशियों के आक्रमण से बचा सका। इस प्रकार शोगुन काफी बदनाम हो गया। अत: शोगुन के पद को समाप्त करने की मांग होने लगी। ऐसे समय में 1866 ई॰ में पुराने शोगुन की मौत हो गई तथा केइकी (Keiki) नामक नया शोगुन गद्दी पर बैठा।

Scanned with CamScanner

1867 ई० में पुराने सम्राट् कोमाई की भी मौत हो गई तथा नये सम्राट् मुत्सुहितो चौबीस वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठा। वह योग्य और बुद्धिमान था। इसने अपने शासन का नाम 'बुद्धिमत्तापूर्ण शासन' (Meiji) रखा। शोगुन विरोधी मुत्सुहितो गुट ने 1867 ई० के अंत में शोगुन पद के अंत तथा सम्राट द्वारा प्रत्यक्ष शासन की स्थापना के लिए सम्राट् के पास आवेदन पत्र दिया। नये शोगुन ने परिस्थिति की जटिलता को परख लिया था। अतः उसने 1867 ई० में खुद ही त्यागपत्र दे दिया। इस प्रकार 265 वर्ष के बाद तोकूगावा कुल का शासन खत्म हुआ और योसीतोमों द्वारा स्थापित शोगुन पद का अंत हुआ। शासन की द्वैधता खत्म हो गई और वास्तविक तथा कानूनी शक्ति सम्राट के हाथ में आ गई। इसे इतिहास में सम्राट की शक्ति के पुनरुद्धार अथवा 'मेईजी पुनर्स्थापन' के नाम से पुकारा जाता है।

परिणाम :-

जापान के इतिहास में सम्राट की शक्ति की पुनर्स्थापना एक क्रांतिकारी घटना थी। इसने जापान में राजनीतिक केंद्रीकरण का रास्ता साफ किया। तथा यह महान् परिवर्तन पाश्चात्य संपर्क की ही देन था। जापानवासियों ने पाश्चात्य सभ्यता की उच्चता को परख लिया था। उसके लिए राजनीतिक केंद्रीकरण प्रथम कदम था। 1868 ई० में ही सम्राट ने अपना दरबार तथा राजधानी क्योटो से हटाकर येदो में कर दिया तथा इसका नाम टोकियो रखा। 1868 ई० में सम्राट् ने शपथ घोषणा पत्र द्वारा ही अब आने वाले परिवर्तन की भी घोषणा की। सम्राट ने जनतांत्रिक विचारधारा, समान न्याय शासन तथा "विचारों के निस्संकोच ग्रहण" का वादा किया। इस प्रकार मेईजी पुनर्स्थापना के बाद जापान में क्रांतिकारी परिवर्तन आया।

Scanned with CamScanner

मेईजी पुनर्स्थापना का महत्व :-

जापान के इतिहास में मेईजी पुनर्स्थापना एक क्रांतिकारी घटना थी। मेईजी ने एक "चार्टर शपथ" जारी की जिसके बल जापान में अनेक महत्वपूर्ण संवैधानिक परिवर्तन लाये। आधुनिक जापान के का निर्माण ~~के~~ मेईजी पुनर्स्थापन से ही संभव हुआ। सामंत-वादी व्यवस्था की समाप्ति हुई। राष्ट्रीयता की भावना का अभूतपूर्व विकास हुआ। कृषि, उद्योग, वाणिज्य के अतिरिक्त ~~कि~~ शिक्षा, साहित्य, कला-कौशल आदि क्षेत्रों में जापान ने तेजी से प्रगति की। परिणामस्वरूप 1894 तक जापान न केवल एशिया अपितु विश्व का एक धनी, समृद्ध एवं शक्तिशाली राष्ट्र बन गया।

मेईजी पुनर्स्थापन ने जापानी साम्राज्यवाद की नींव भी रखी। जापानी सेना को पुनर्गठित कर इसे एक शक्तिशाली बनाया। औद्योगिक प्रगति तथा जापान की बढ़ती हुई आबादी की समस्या ने जापान को साम्राज्यवादी देश बना दिया।

Scanned with CamScanner